

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 26, मोक्ष, भाग 1

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 26, मोक्ष, भाग 1 है।

अब मैं अगले दो सत्रों और अगले दो व्याख्यानों में मोक्ष के बाइबिल-धर्मशास्त्रीय न्यू टेस्टामेंट विषय पर बात करना चाहता हूँ। एक अर्थ में, हम बाइबिल की कहानी की संपूर्णता को अपने लोगों को बचाने और बचाने के लिए इतिहास में ईश्वर के मुक्तिदायी ऐतिहासिक हस्तक्षेप के रूप में देख सकते हैं।

लेकिन इसलिए, एक स्तर पर, अब तक हम जिस बारे में बात कर रहे हैं वह सब परमेश्वर की छुटकारे की कहानी या परमेश्वर के उद्धार, उद्धार के विषय की व्यापक छत्रछाया में आ सकता है। इसलिए, सबसे पहले, मैं जो करना चाहता हूँ वह परमेश्वर के उद्धार की पुराने नियम की कहानी का सारांश है, जो केवल उन विशेषताओं को एकीकृत करता है जिनके बारे में हम पहले ही अन्य विषयों के संबंध में बात कर चुके हैं। इसलिए, जब हम पुराने नियम की कहानी को देखते हैं, तो यह आदम और हव्वा के साथ शुरू होती है जो परमेश्वर के स्वरूप के वाहक हैं, परमेश्वर के उप-शासक जो उसके प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं, और जिनका उद्देश्य परमेश्वर के शासन और परमेश्वर की उपस्थिति को पूरी सृष्टि में फैलाना है।

फिर भी हमने देखा कि आदम और हव्वा पाप के कारण इस कार्य में असफल हो गए; उनके विद्रोह और अवज्ञा के कारण, वे असफल हो गए, और उन्हें बगीचे से निर्वासित कर दिया गया, जो परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान था। तो, फिर सवाल उठता है: परमेश्वर उत्पत्ति 1 और 2 से अपने लोगों और सृष्टि के लिए अपने इरादे को कैसे बहाल करेगा? और वह उस रिश्ते को कैसे बहाल करेगा? वह एक बार फिर अपने लोगों के साथ कैसे रहेगा, उनके बीच कैसे रहेगा, उन्हें उनके देश में कैसे लाएगा? उस सवाल का जवाब परमेश्वर द्वारा अब्राहम और इस्राएल राष्ट्र को उस काम को पूरा करने के साधन के रूप में चुनने से शुरू होता है जिसे आदम और हव्वा करने में असफल रहे। और इसलिए, अब्राहम और इस्राएल राष्ट्र सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद हैं।

उन्हें सभी राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश बनना है। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति और परमेश्वर के शासन की मध्यस्थता करने के लिए याजकों के एक राज्य के रूप में कार्य करना है और अंततः इसे पूरी धरती पर फैलाना है ताकि वह वही कर सके जो आदम और हव्वा को करना चाहिए था लेकिन वे अपने लोगों और सृष्टि के लिए परमेश्वर के मूल इरादे को पूरा करने में विफल रहे। लेकिन वे आदम की तरह विफल हो गए, और इस्राएल को भी भूमि से और आशीर्वाद के स्थान से, परमेश्वर की उपस्थिति के स्थान से निर्वासित कर दिया गया।

तो एक बार फिर, हम इस सवाल से जूझ रहे हैं कि परमेश्वर आदम के ज़रिए जो उद्देश्य चाहता था और जो इस्राएल के ज़रिए पूरे होने थे, लेकिन वे भी पूरा नहीं कर पाए, उसे कैसे पूरा करेगा?

दूसरे शब्दों में, जब हम छुटकारे की कहानी के बारे में सोचते हैं, तो यह समझना ज़रूरी है कि परमेश्वर अपनी पिछली योजनाओं को यँ ही खत्म नहीं कर सकता। वह यँ ही नहीं कह सकता कि, आदम ने काम नहीं किया, और इस्राएल ने काम नहीं किया। मैं कुछ और कोशिश करता हँ।

मैं योजना सी आजमाता हँ। इसके बजाय, परमेश्वर को अपने वादे पूरे करने चाहिए, और परमेश्वर आदम और इस्राएल के ज़रिए अपने वादे पूरे करेगा। इसलिए, परमेश्वर को, पूरी धरती पर उद्धार लाने में, आदम और हव्वा के ज़रिए पूरी सृष्टि के लिए अपने इरादे को पूरा करने में, इस्राएल को भी छुड़ाना चाहिए। उसे अपने लोगों, इस्राएल को भी बचाना चाहिए, ताकि उद्धार धरती के छोर तक पहुँच सके।

सबसे पहले, परमेश्वर को इस्राएल के साथ व्यवहार करना चाहिए और उनके पापों को क्षमा करना चाहिए ताकि आदम और हव्वा के माध्यम से और उनकी मूल रचना के लिए उनके वादों और उनके इरादों की पूर्ति में पृथ्वी के छोर तक उद्धार हो सके। और पुराने नियम की छुटकारे की कहानी, वह उद्धार जो परमेश्वर अपने लोगों को देने का इरादा रखता है, परमेश्वर यीशु मसीह को अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान के माध्यम से अपने लोगों को बचाने के लिए भेजकर पूरा करता है। इसलिए, मसीह, सबसे पहले, इस्राएल को नवीनीकृत करने, पुनर्स्थापित करने और छुड़ाने के लिए आता है, इस्राएल की नियति को मूर्त रूप देता है और अपनी मृत्यु का प्रबंध करता है, अपने लोगों के पापों के लिए बलिदान का प्रबंध करता है, ताकि तब आशीर्वाद पृथ्वी के सभी छोर तक जा सके, तब उद्धार का आशीर्वाद अन्यजातियों तक फैल सकता है।

और फिर, मसीह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से ऐसा करता है और यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से यहूदी और गैर-यहूदी को परमेश्वर के एक सच्चे लोगों में शामिल करता है। वह ऐसा पहले से ही उस अंतिम परिणति, उस अंतिम अभिव्यक्ति से पहले करता है, जिसे हम प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में सृष्टि के लिए परमेश्वर के मूल इरादे की पूर्ति में, इस्राएल को पुनर्स्थापित करने और फिर गैर-यहूदियों को शामिल करने के लिए जो उद्धार लाने का इरादा रखता है, उसकी पूर्ति में पूरी मानवता के साथ करता है। हम पाते हैं कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर के साथ एक नए वाचा संबंध में एक नए सिरे से पृथ्वी पर निवास कर रहे हैं, यहूदी और गैर-यहूदी एक नई सृष्टि में निवास कर रहे हैं, जिसमें परमेश्वर उनके बीच रहता है।

इसलिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक परमेश्वर के अपने लोगों के साथ व्यवहार की लंबी, मुक्तिदायी, उद्धारकारी कहानी के साथ समाप्त होती है, जो प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की नई सृष्टि में अपने चरमोत्कर्ष और पराकाष्ठा को प्राप्त करती है। इसलिए, एक स्तर पर, उद्धार शब्द को एक व्यापक शब्द के रूप में देखा जा सकता है, लगभग एक छत्र शब्द जो पाप की दुर्दशा से उन्हें बचाने के लिए परमेश्वर के अपने लोगों के साथ मुक्तिदायी-ऐतिहासिक व्यवहार को संदर्भित करता है, पाप की दुर्दशा जिसका परिचय उत्पत्ति अध्याय 3 में दिया गया है, और फिर अपने लोगों को पुनर्स्थापित करने और अपने लोगों और अपनी सृष्टि के लिए अपने मूल इरादे को पुनर्स्थापित करने के लिए। इस बिंदु पर यह महसूस करना भी महत्वपूर्ण है कि जब हम उद्धार के संदर्भ में सोचते हैं, जब हम परमेश्वर के उद्धार के बारे में बात करते हैं जो वह अपने लोगों के लिए

लाता है, जब हम उद्धार के बारे में बात करते हैं, तो यह एक मानवीय दुर्दशा को मानता है, यह कुछ ऐसा मानता है जिससे उन्हें बचाया जाता है या बचाया जाता है।

अर्थात्, यह मानवीय पापपूर्णता को मानता है। रोमियों की पुस्तक में पॉल के तर्क का एक हिस्सा अध्याय 1 और 3 में मानवीय पापपूर्णता की मानवीय दुर्दशा को प्रदर्शित करके शुरू करना है। रोमियों के अध्याय 1 से 3 में, पॉल मानवीय पापपूर्णता को साबित करने की कोशिश नहीं करता है।

उसका उद्देश्य यह दिखाना नहीं है कि मनुष्य कितने पापी हैं; बल्कि, उसका उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि परमेश्वर का क्रोध उचित है, निंदा करना या निंदा की घोषणा करना, मानवता पर उनके पाप के कारण निर्णय सुनाना। यही कारण है कि परमेश्वर की धार्मिकता आवश्यक है और क्यों परमेश्वर की धार्मिकता की घोषणा अध्याय 3 में होती है। लेकिन रोमियों अध्याय 1 से 3 मानवता की निंदा को प्रदर्शित करता है। यह दर्शाता है कि परमेश्वर के क्रोध का उंडेला जाना, अध्याय 1, पद 18, मानवीय पाप के कारण उचित है।

और इसलिए, पौलुस निंदा करता है; पौलुस वास्तव में यहूदी और गैर-यहूदी दोनों की निंदा को दर्शाता है, अध्याय 1 में गैर-यहूदियों से शुरू करते हुए, लेकिन अध्याय 2 और 3 में यहूदियों को शामिल करने के लिए आगे बढ़ता है। ताकि जब आप अध्याय के अंत में, अध्याय 3 के मध्य में पहुँचें, तो पूरी मानवता परमेश्वर के सामने निंदा की हुई है, यहूदी और गैर-यहूदी दोनों समान रूप से। इसलिए, पौलुस ने प्रसिद्ध शब्द कहे जिन्हें हम अक्सर उद्धृत करते हैं: कोई भी व्यक्ति धर्मी नहीं है, एक भी व्यक्ति नहीं, पद 20। इसलिए, व्यवस्था के कामों से कोई भी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी घोषित नहीं किया जाएगा; बल्कि, व्यवस्था के माध्यम से, हम अपने पापों के प्रति सचेत हो जाते हैं। पौलुस पद 10 जैसी बातें कहता है, जैसा कि लिखा है: कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं, कोई भी ऐसा नहीं जो समझ सके, कोई भी ऐसा नहीं जो परमेश्वर को खोजे, सभी ने मुँह फेर लिया है।

और फिर, कोई भी व्यक्ति व्यवस्था के कामों से धर्मी घोषित नहीं किया जाएगा क्योंकि सारी मानवता पाप के बंधन में है। और फिर यह एक तरह से रोमियों 3 अध्याय की आयत 23 में उस प्रसिद्ध संदर्भ के साथ चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है: सभी ने पाप किया है, यहूदी और गैर-यहूदी, सारी मानवता ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है। और इसलिए, स्थिति को केवल उस धार्मिकता से सुधारा जा सकता है जो परमेश्वर यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से प्रदान करता है।

इसलिए, उद्धार की चर्चा मानवीय दुर्दशा को मानती है; यह मानवीय पापपूर्णता को मानती है, जिसके कारण मनुष्य बंधन में है और उसे बचाव या उद्धार की आवश्यकता है। बाद में रोमियों अध्याय 6 में, पद 15 से शुरू करते हुए, ध्यान दें कि पौलुस दासता की स्थिति की तुलना और विरोधाभास कैसे करता है। वह कहता है कि हम एक बार पाप के दास थे, हालाँकि अब हम यीशु मसीह के दास हैं।

पद 12 में वे कहते हैं, इसलिए पाप को अपने नश्वर शरीर में राज न करने दें ताकि आप उसकी बुरी इच्छाओं का पालन करें। यही हमारी पिछली स्थिति थी, पाप हमारे नश्वर शरीर में राज करता था। हम इसके गुलाम थे और इसकी आज्ञा का पालन करते थे। पद 13: अपने किसी भी हिस्से को दुष्टता के साधन के रूप में पाप को न दें, बल्कि अपने आप को परमेश्वर को ऐसे पेश करें जैसे कि आप मृत्यु से जीवन में लाए गए हैं।

और अपने आप को धार्मिकता के हथियार के रूप में पेश करो, क्योंकि पाप अब तुम्हारे स्वामी न होंगे, क्योंकि तुम अब व्यवस्था के अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हो। फिर, आयत 16 में, क्या तुम नहीं जानते कि जब तुम अपने आप को किसी आज्ञाकारी दास को सौंपते हो, तो तुम उसी के दास हो जिसकी तुम आज्ञा मानते हो?

चाहे आप पाप के गुलाम हों, जो मौत की ओर ले जाता है, या आज्ञाकारिता के, जो धार्मिकता है, हम इफिसियों अध्याय 2 को देखते हैं। इफिसियों अध्याय 2 में, पहले कुछ छंदों में, पौलुस उस स्थिति का वर्णन करता है जिससे हमें बचाया गया है। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे।

फिर से, शायद, अंततः उत्पत्ति अध्याय 3 और निम्नलिखित अंशों को प्रतिबिंबित करते हुए, जहां मृत्यु मानव पाप का परिणाम है। इसलिए, आप अपने अपराधों और पाप में मरे हुए थे, जिसमें आप रहते थे, जब आप इस दुनिया के तरीकों और हवा के राज्य के शासक का अनुसरण करते थे। आत्मा अब उन लोगों में काम कर रही है जो अवज्ञा के पुत्र हैं।

हम सभी एक समय में उनके बीच रहते थे, शरीर की लालसाओं को संतुष्ट करते हुए और उसकी इच्छाओं और विचारों का अनुसरण करते हुए। बाकी लोगों की तरह, हम स्वभाव से क्रोध के पात्र थे, या क्रोध के बच्चे परमेश्वर के क्रोध के पात्र थे। लेकिन फिर, जैसा कि पाठ आगे कहता है, अपने प्रेम और दया के कारण, परमेश्वर ने हमें मसीह में जीवित कर दिया जब हम मर चुके थे।

अनुग्रह से, आप यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से बचाए गए हैं। और परमेश्वर ने हमें उठाया और हमें बैठाया। इसलिए, बार-बार, नया नियम मानवीय दुर्दशा और मानवीय पाप की स्थिति को मानता है, जिससे हमें बचाया जाना चाहिए।

हम पाप के कारण खुद को परमेश्वर के क्रोध के अधीन पाते हैं। परमेश्वर के क्रोध का पात्र न्याय है। उसका न्यायोचित दण्ड और न्याय।

और उद्धार में हमें बचाने का परमेश्वर का कार्य उसी के प्रत्युत्तर में है। अब, मैं अपने अगले कुछ सत्रों में जो देखना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं कई छवियों के संदर्भ में उद्धार पर नए नियम की शिक्षा को देखना शुरू करना चाहता हूँ, विभिन्न छवियाँ जो वास्तव में पुराने नियम से आती हैं और उन्हें उसी की पूर्ति के रूप में देखा जाता है। लेकिन ऐसी छवियाँ भी जो संभवतः प्रतिध्वनित होती हैं, और उनमें से कई प्रतिध्वनित होती हैं, पॉल और नए नियम के लेखक के अपने दिन और संस्कृति के साथ।

लेकिन मैं उन विभिन्न छवियों को देखना चाहता हूँ जो उद्धार की वास्तविकता को संदर्भित करती हैं जिसे हम अब यीशु मसीह के माध्यम से अनुभव करते हैं। और वे छवियाँ जो सीधे नए नियम से आती हैं, लेकिन फिर से, वे जो पुराने नियम से भी जुड़ी हैं। पहचानने वाली दूसरी बात यह है कि ये सभी छवियाँ, अन्य विषयों के साथ सुसंगत हैं जिन्हें हमने देखा है, और आप इसे सुनकर थक जाएँगे, लेकिन यह नए नियम में जो कुछ भी हो रहा है, उसे समझने में बहुत मदद करता है, ये सभी छवियाँ उद्घाटन किए गए युगांतशास्त्र के उस पहले से ही-लेकिन-अभी-नहीं तनाव को साझा करती हैं।

अर्थात्, उद्धार एक ऐसी चीज़ है जिसका हम पहले से ही अनुभव कर रहे हैं। अर्थात्, पुराने नियम में वादा किए गए उद्धार के अंतिम समय के आशीर्वाद, जिन्हें हम पहले से ही अनुभव करते हैं और उद्धार के उन आशीर्वादों के अंतिम प्रकटीकरण से पहले मसीह के कार्य के आधार पर उनमें भाग लेते हैं। फिर मैं जो करना चाहता हूँ वह व्यापक विषय से शुरू करना है, और वह है उद्धार का विषय।

उद्धार एक ऐसा शब्द है जिसका सीधा सा अर्थ है बचाव या मुक्ति, बहुत व्यापक और सामान्य स्तर पर, किसी खतरे से बचाव या मुक्ति। फिर नया नियम उस शब्दावली का उपयोग इस संदर्भ में करता है कि परमेश्वर ने हमें पाप से बचाने या छुड़ाने और उस पाप के कारण भविष्य के न्याय से बचाने के लिए क्या किया है। शायद एक शुरुआती बिंदु, अगर हम कर सकते हैं, तो उद्धार की बात आने पर सुसमाचार से शुरू करना चाहिए। सबसे स्पष्ट संदर्भ, जिसका हमने कई अवसरों पर उल्लेख किया है, मैथ्यू अध्याय 1 और श्लोक 21 है जब यूसुफ को बताया जाता है कि उस बच्चे का नाम क्या रखना है जिसे मरियम जन्म देने वाली है।

उसे उसका नाम यीशु रखने को कहा गया क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। संभवतः यहाँ, मुख्य रूप से इस्राएल को उन पापों से बचाने का संदर्भ दिया गया है जिनके कारण उन्हें निर्वासन में जाना पड़ा। हमने कहा कि कम से कम कुछ नए नियम के लेखक और कई यहूदी लेखक समझ गए होंगे कि इस्राएल अभी भी निर्वासन में है।

और इसलिए अब यीशु आते हैं, उनके आने का उद्देश्य अपने लोगों को बचाना, उन्हें छुड़ाना और उन्हें उनके पापों से बचाना है, जिनके कारण उन्हें निर्वासन में जाना पड़ा, उन्हें छुड़ाना और उन्हें मुक्ति दिलाना है। हालाँकि इस बिंदु पर, मैथ्यू हमें यह नहीं बताता कि यह कैसे होता है और यह कैसा दिखता है, लेकिन सुसमाचार के आगे बढ़ने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यीशु क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा उन्हें उनके पापों से बचाएगा। क्रूस पर उनकी मृत्यु पाप की समस्या से निपटेगी, और यही वह माध्यम होगा जिसके द्वारा यीशु अपने लोगों, विशेष रूप से इस्राएल को पापों से बचाएगा और उन्हें निर्वासन की स्थिति से बचाएगा।

लूका के सुसमाचार में, हम पाते हैं कि यीशु मसीह का सबसे आम नाम उद्धारकर्ता है। यीशु मसीह को दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में चित्रित किया गया है। हम यीशु को, विशेष रूप से समाज से बहिष्कृत और पापियों के उद्धारकर्ता के रूप में देखते हैं।

हम उसे कर वसूलने वालों को बचाते हुए देखते हैं। हम उसे सामरियों और कोढ़ियों, कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों को बचाते हुए देखते हैं। हम यीशु को लोगों को बचाने के लिए आगे बढ़ते हुए देखते हैं, खास तौर पर उन लोगों को जो समाज से बहिष्कृत हैं और समाज के हाशिये पर हैं।

लेकिन यीशु को दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में चित्रित किया गया है। वास्तव में, उद्धार या उद्धारकर्ता शब्द केवल लूका में या सुसमाचार में कहीं और की तुलना में लूका में अधिक बार आते हैं। कुछ लोग तो लूका को उद्धार का सुसमाचार भी कहते हैं।

ऐसा लगता है कि उद्धार ही वह प्रमुख तरीका है जिससे मसीह का वर्णन किया गया है। बार-बार, यीशु को अपने लोगों के लिए उद्धार लाने वाले के रूप में देखा जाता है। इसे विकसित करने वाला एक पुराना काम आई. हॉवर्ड मार्शल द्वारा लिखा गया एक छोटा खंड है जिसमें ल्यूक को इतिहासकार और धर्मशास्त्री कहा गया है।

वह बार-बार लूका और प्रेरितों के काम दोनों में उद्धार के मुख्य विषय को प्रदर्शित करता है। इसलिए यीशु दुनिया का उद्धारकर्ता है। यीशु ही वह है जो अपने लोगों को उद्धार प्रदान करता है।

यह पहले अध्याय में सबसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हम लूका को पूरी तरह से नहीं पढ़ेंगे और उन सभी जगहों को नहीं देखेंगे जहाँ उद्धार होता है। न ही हम प्रेरितों के काम में ऐसा करेंगे।

लेकिन लूका अध्याय 1 में, पहले ही अध्याय में, हम उद्धार पाते हैं। हम पाते हैं कि परमेश्वर अब हस्तक्षेप कर रहा है। परमेश्वर अब अपने लोगों को उद्धार दिलाने के लिए कार्य कर रहा है।

हम इसे लूका के अध्याय 1 में गाए गए विभिन्न गीतों या दिए गए विभिन्न भाषणों में देखते हैं। उदाहरण के लिए, लूका अध्याय 1 और श्लोक 47 में, मरियम का गीत जॉन बैपटिस्ट के जन्म और यीशु के जन्म के प्रति प्रतिक्रिया में है। खास तौर पर उस बच्चे के प्रति जिसे वह जन्म देने वाली है।

इसके जवाब में, मरियम कहती है, " मेरी आत्मा प्रभु की महिमा करती है, और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित होती है।" तो, पहले से ही, मरियम द्वारा गाया गया भजन परमेश्वर के मुख्य विषय को दर्शाता है जो अब अपने लोगों के लिए उद्धार और मुक्ति लाने के लिए कार्य कर रहा है। हम इसे बाद में अध्याय 1 के छंद 67-69 में जकर्याह के गीत में भी देखते हैं। उनके पिता, जकर्याह, पवित्र आत्मा से भर गए और भविष्यवाणी की। इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो, क्योंकि वह अपने लोगों के पास आता है और उन्हें छुड़ाता है।

उसने अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिए उद्धार का एक सींग खड़ा किया है। दिलचस्प बात यह है कि अगर आप यीशु के जन्म के संदर्भ में अध्याय 2 पर जाएं, तो देखें कि कैसे उद्धार फिर से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्याय 2, पद 11 में, जब स्वर्गदूत यीशु मसीह के जन्म की घोषणा करने के लिए चरवाहों के सामने प्रकट होता है, मसीह के जन्म की खुशखबरी,

स्वर्गदूत उनसे कहता है, पद 10, डरो मत मैं तुम्हारे लिए खुशखबरी लेकर आया हूँ जो सभी लोगों के लिए बहुत खुशी का कारण बनेगी।

आज, दाऊद के शहर में, आपके लिए एक उद्धारकर्ता पैदा हुआ है, और वह मसीहा या प्रभु यीशु मसीह है। बाद में, जब यीशु को समर्पित करने के लिए मंदिर में लाया जाता है, तो श्लोक 30 में, शिमोन नाम का एक व्यक्ति मंदिर में आता है और बच्चे को देखता है। शिमोन बच्चे को अपनी बाहों में लेता है और अब कहता है, हे प्रभु, जैसा कि आपने वादा किया था, अब आप अपने सेवक को शांति से विदा कर सकते हैं, क्योंकि मेरी आँखों ने आपका उद्धार देखा है। इसलिए, पहले से ही अध्याय 1 में, ल्यूक यह स्पष्ट करना चाहता है कि यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर का उद्धार, आशीर्वाद के संदर्भ में उसका उद्धार जो अब वह अपने लोगों को लाने वाला है, अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में मौजूद है और पूरा हो रहा है।

जाहिर है, जैसा कि हमने कहा, प्रेरितों के काम की पुस्तक, जो कि लूका के दो-खंडीय कार्य का दूसरा खंड है, प्रेरितों के काम की पुस्तक भी उद्धार या उद्धारकर्ता भाषा से भरी हुई है, प्रेरितों के काम अध्याय 4 और पद 12। फिर से, मैं आपको प्रेरितों के काम, अध्याय 4 और पद 12 में उद्धार की भूमिका के कुछ उदाहरण देना चाहूंगा। 4:12 में, हम पढ़ते हैं, उद्धार किसी दूसरे के द्वारा नहीं पाया जाता क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को कोई ऐसा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

कुछ लोग तो यह भी कहेंगे कि यह आयत नए नियम की शिक्षा का सारांश प्रस्तुत करती है या कम से कम उद्धार की शिक्षा के रूप में कार्य करती है। चूंकि पिछली आयत में यीशु मसीह ब्रह्मांड का प्रभु है, इसलिए क्रूस पर चढ़ाए गए मसीहा को जीवित कर दिया गया है, और अब उद्धार केवल यीशु मसीह के व्यक्तित्व में ही पाया जाता है। अध्याय 15, प्रेरितों के काम अध्याय 15, और आयत 11 भी।

प्रेरितों के काम अध्याय 15 और पद 11 में, मैं वापस जाकर पद 12 पढ़ूंगा। तो फिर, तुम अन्यजातियों की गर्दन पर ऐसा जूआ डालकर परमेश्वर की परीक्षा क्यों लेना चाहते हो जिसे न तो हम उठा पाए और न ही हमारे पूर्वज? नहीं, हम मानते हैं कि यह हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से है कि हम वैसे ही बचाए गए हैं जैसे वे हैं। तो अब उद्धार, फिर से परमेश्वर ने यीशु मसीह के माध्यम से कृपापूर्वक कार्य किया है, व्यवस्था का पालन करने के माध्यम से नहीं बल्कि अब अपने लोगों के लिए उद्धार लाने के लिए यीशु मसीह के माध्यम से कार्य किया है।

अध्याय 13 में भी हमें कुछ ऐसा ही मिलता है। अध्याय 13 और श्लोक 38, इसलिए, मेरे दोस्तों, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि यीशु के द्वारा पापों की क्षमा आपको सुनाई गई है। उसके द्वारा, हर कोई जो विश्वास करता है, पाप से मुक्त हो जाता है, एक औचित्य जो आप मूसा की व्यवस्था या मूसा की व्यवस्था के तहत प्राप्त नहीं कर सकते।

सावधान रहें कि भविष्यवक्ताओं ने जो कहा है वह आपके साथ न हो। इसलिए एक बार फिर, मसीह के आगमन के साथ अपने लोगों के साथ परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में मुक्ति और

उद्धार आता है। उद्धार केवल यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से आता है, न कि मूसा के कानून से।

और बार-बार, हम प्रेरितों के काम में देखते हैं कि यह पश्चाताप की प्रतिक्रिया है और उद्धार के लिए विश्वास आवश्यक है। फिर से, यह यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमारा उद्धार पूरा होता है। जब हम पौलुस के पत्रों में जाते हैं, तो फिर से, हम पाते हैं कि उद्धार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और मैं उद्धार को एक व्यापक शब्द के रूप में देख रहा हूँ, लेकिन हम इसे एक अलग विषय के रूप में भी देख सकते हैं।

पॉल के पत्रों में, हम अपने लोगों को बचाने में परमेश्वर के कार्यों के स्पष्ट संदर्भ पाते हैं। उदाहरण के लिए, 1 थिस्सलुनीकियों में, हम पाते हैं कि पॉल परमेश्वर के उद्धार का उल्लेख करता है। पुस्तक के बिलकुल आरंभ में, अध्याय 1 में पद 10 में, मैं पीछे जाकर पद 9 का भाग पढ़ूँगा क्योंकि यह वाक्य के मध्य में है। वे बताते हैं कि आपने कैसे पॉल को थिस्सलुनीकियों के बारे में जो कुछ सुना है, उसके बारे में रिपोर्ट करते हुए बदल दिया।

वे बताते हैं कि कैसे आप मूर्तियों से परमेश्वर की ओर मुड़े ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें और स्वर्ग से उसके पुत्र की प्रतीक्षा करें जिसे उसने मृतकों में से जीवित किया, यीशु, जो हमें आने वाले क्रोध से बचाता है। और हम अध्याय 5 और पद 9 में कुछ ऐसा ही देखते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध सहने के लिए नहीं बल्कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार प्राप्त करने के लिए नियुक्त किया है। तो यहाँ, उद्धार को परमेश्वर के क्रोध से हमें बचाने या छुड़ाने के संदर्भ में समझा जाता है; यह परमेश्वर का न्यायपूर्ण न्याय और दंड है जिसके हम पात्र हैं क्योंकि लोग पाप के कारण इसके पात्र हैं।

रोमियों के अध्याय 5 में भी हमें ऐसी ही भाषा मिलती है। अगर आप रोमियों की ओर मुड़ें, तो लेखक ने अपनी किताब की शुरुआत सुसमाचार के संदर्भ से की है, और इसमें उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति पाई जाती है। लेकिन रोमियों के अध्याय 5 और आयत 9 और 10, यानी गलातियों, अब मैं रोमियों की ओर आता हूँ।

रोमियों अध्याय 5 और आयत 9 और 10, चूँकि हम उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं, जो कि पौलुस ने पहले चार अध्यायों में तर्क दिया है, हम यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराए गए हैं। हम धर्मी ठहराए जाने के विषय पर थोड़ी देर बाद बात करेंगे। लेकिन चूँकि अब हम उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं, तो हम उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से कितने अधिक बचेंगे? क्योंकि यदि हम परमेश्वर के शत्रु थे, तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से मेल मिलाप कर लिया गया, तो फिर मेल मिलाप हो जाने पर उसके जीवन के द्वारा हम और अधिक क्यों न बचेंगे? तो एक बार फिर, उद्धार को परमेश्वर के क्रोध से बचाने या मुक्ति के रूप में देखा जाता है, अर्थात्, उसका न्याय, वह दण्ड जो वह उन लोगों पर डालेगा जो उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं, जो पापी हैं, और उद्धार को अब उस अंतिम समय के न्याय, परमेश्वर के क्रोध के उंडेले जाने से बचाव के रूप में देखा जा रहा है।

यह उद्धार का अभी तक न हुआ पक्ष है; परमेश्वर लोगों को अंतिम समय के न्याय से बचा रहा है। हालाँकि, हम पौलुस के पत्रों में एक ऐसा आयाम भी देखते हैं जो पहले से ही मौजूद है, कि उद्धार भी एक वर्तमान घटना है। उदाहरण के लिए, कुलुस्सियों के अध्याय 1 और पद 13 में, मुझे लगता है कि हम उद्धार को एक वर्तमान वास्तविकता के रूप में देखते हैं।

कुलुस्सियों 1:13, क्योंकि उसने हमें अंधकार के प्रभुत्व से छुड़ाया है और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में ले आया है, जिसमें हमें छुटकारा मिला है। अर्थात् पुत्र, यीशु मसीह में, हमें छुटकारा मिला है, पापों की क्षमा। इसलिए, अब उद्धार, फिर से, परमेश्वर ने हमें शैतान के प्रभुत्व, इस वर्तमान युग के प्रभुत्व के अधीन होने से बचाया है। उसने हमें छुड़ाया है और उससे हमें बचाया है।

हम पहले ही इफिसियों के अध्याय 2 को देख चुके हैं, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि इफिसियों के अध्याय 2 में उद्धार भी एक वर्तमान वास्तविकता है। इफिसियों अध्याय 2 और पद 5, लेकिन उसके महान प्रेम से, यद्यपि हम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, इस वारिस के अधिकार के शासन के अधीन, अपने पापों के कारण क्रोध के पात्र थे, लेकिन अपने महान प्रेम और दया के कारण, परमेश्वर जो दया में धनी है, ने हमें मसीह के साथ जीवित किया, भले ही हम अपने अपराधों में मरे हुए थे, यह अनुग्रह से है कि आप बच गए हैं। अर्थात्, इस संदर्भ में, हमारे अपराधों और पापों में मृत होने से बचाए गए, परमेश्वर के क्रोध से बचाए गए।

और पद 8, क्योंकि यह अनुग्रह से है, तुम विश्वास के द्वारा बचाए गए हो। और यह तुम्हारी ओर से नहीं है, और यह परमेश्वर का उपहार है, जो कामों पर आधारित नहीं है ताकि कोई घमंड न करे। और आप तीतुस 3:5 भी जोड़ सकते हैं, एक पाठ जिसे हमने पहले पढ़ा था।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि रोमियों की पुस्तक अध्याय 1 की 16वीं आयत से शुरू होती है। पौलुस कहता है, क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, क्योंकि यह परमेश्वर की शक्ति है जो हर उस व्यक्ति को उद्धार प्रदान करती है जो विश्वास करता है। इसलिए, सुसमाचार के संदेश के मूल में, सुसमाचार का केंद्रीय संदेश यह है कि अब परमेश्वर अपने लोगों को बचाने और बचाने के लिए आता है। परमेश्वर अपने लोगों को वादा किया हुआ उद्धार देने के लिए आता है।

और यह परमेश्वर की शक्ति है जो इसे पूरा करने में सक्षम है। इसलिए, उद्धार, फिर से, पूरे लेखन में एक प्रमुख विषय है, विशेष रूप से पॉल के लेखन में। विचार यह है कि परमेश्वर अब उद्धार के वादों, उद्धार के नए युग से जुड़ी प्रतिज्ञा की गई आशीषों और पुराने नियम में दिए गए वादे को अपने लोगों तक लाने के लिए आया है।

वह उन्हें परमेश्वर के क्रोध से बचाने, उन्हें पाप से, शैतान की शक्ति और बुराई की शक्ति से बचाने, और उन्हें बचाने और उन्हें क्षमा और मुक्ति का आशीर्वाद देने के लिए आया है। उद्धार से संबंधित दूसरे विषय पर आगे बढ़ते हुए, परमेश्वर के लोगों का चुनाव है। परमेश्वर अपने लोगों को चुने हुए के रूप में चित्रित करता है।

नए नियम के लेखक परमेश्वर के लोगों को चुने हुए, निर्वाचित के रूप में चित्रित करते हैं। इस बिंदु पर, मैं कैल्विनवाद और आर्मिनियनवाद के बीच अधिक व्यवस्थित धार्मिक बहस में प्रवेश करने

में रुचि नहीं रखता, हालांकि मुझे लगता है कि यह मूल्यवान और महत्वपूर्ण है। क्या हमें चुनाव को आर्मिनियन ढांचे में अधिक समझना चाहिए? क्या हमें इसे सुधारवादी या कैल्विनवादी ढांचे में अधिक समझना चाहिए? लेकिन इसके बजाय, फिर से, मैं यह नोट करना चाहता हूँ कि यह पॉल के पत्रों में कैसे कार्य करता है, और हम पाते हैं, और हमने पहले ही परमेश्वर के लोगों के विषय के साथ इस बारे में बात की है, लेकिन यहां हम पुराने नियम में चयन या चुनाव की भाषा पाते हैं, हम पाते हैं कि पुराने नियम की भाषा अब परमेश्वर के नए नियम के लोगों या परमेश्वर के नए लोगों पर लागू होती है।

इफिसियों के अध्याय 1 और पद 4, एक ऐसे भाग में जहाँ पौलुस अपने लोगों से परमेश्वर की स्तुति करने के लिए कहता है क्योंकि उसने अपने लोगों पर उद्धार की आशीषें बरसाई हैं और यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से इसे पूरा किया है। इफिसियों की शुरुआत पद 4 से होती है, क्योंकि परमेश्वर ने हमें दुनिया की रचना से पहले ही उसमें चुन लिया है कि हम उसकी नज़र में पवित्र और निर्दोष हों। हम कुलुस्सियों के अध्याय 3, पद 12 में भी पाते हैं कि परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में, हम पवित्र और प्रिय हैं।

तो, मुझे लगता है कि चुनने की यह भाषा पुराने नियम से आती है। यह इस्राएल राष्ट्र था जिसे चुना गया था। वे परमेश्वर के प्रिय थे।

वे परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। उन्हें परमेश्वर ने अपनी संपत्ति होने के लिए चुना था। अब, हम पाते हैं कि यह भाषा परमेश्वर के उन लोगों पर लागू होती है जिन्हें परमेश्वर बचाता है।

यह चयन भाषा दर्शाती है कि वे वास्तव में ईश्वर के लोग हैं जिन्हें ईश्वरीय पहल द्वारा बनाया और अस्तित्व में बुलाया गया है। इसलिए, यह चयन भाषा मुख्य रूप से लोगों को अपने पास बुलाने, लोगों को चुनने में ईश्वर की अनुग्रहपूर्ण पहल को प्रदर्शित करने के लिए है। ईश्वर के लोगों को उनकी कृपा से चुना गया है, जो दर्शाता है कि वे ईश्वर के सच्चे लोग हैं।

यह संभवतः स्पष्ट रूप से यह भी दर्शाता है कि लोगों को चुनने में परमेश्वर के लोग अनंत काल से परमेश्वर की योजना का स्पष्ट रूप से हिस्सा हैं। फिर से, हम अपने आर्मिनियन और कैल्विनवादी वाद-विवाद में आगे नहीं जा रहे हैं कि हम इसे कैसे तैयार करते हैं और इसे हमारे चयन या परमेश्वर के पूर्वज्ञान, आदि के संबंध में कैसे समझते हैं, लेकिन बस हमारे उद्धार के संबंध में उस भाषा के कार्य को पहचानना है, वह उद्धार जो अब परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए पूरा किया है। लेकिन चुनाव का चयन परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को बचाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, परमेश्वर द्वारा अब अपने लिए लोगों को बुलाने, लोगों को अस्तित्व में लाने के लिए अनुग्रहपूर्ण पहल करना।

दूसरी विशेषता जिसके बारे में मैं बहुत विस्तार से नहीं बताना चाहता, वह यह है कि क्या चुनाव की भाषा व्यक्तियों पर लागू होती है या केवल निगमों पर। मेरी राय में, यह संभवतः एक ही समय में दोनों ही है। एक और छवि, हमारे उद्धार का वर्णन करने में एक और बहुत महत्वपूर्ण छवि पापों की क्षमा की भाषा है।

यिर्मयाह अध्याय 31 और यहजेकेल 36 में नई वाचा के वादों में से एक यह है कि परमेश्वर हमारे पापों से निपटेगा और पापों की क्षमा का वादा करेगा। मुझे यिर्मयाह पढ़ना चाहिए; मैं सिर्फ पाठ पढ़ूंगा। यिर्मयाह अध्याय 31 और श्लोक 33 से शुरू करें।

यहोवा की यह वाणी है, यह वही वाचा है जो मैं उस समय के बाद इस्राएल के लोगों के साथ बाँधूँगा। मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में डालूँगा और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे।

वे अब अपने पड़ोसी को नहीं सिखाएँगे या एक दूसरे से नहीं कहेंगे, प्रभु को जानो। फिर श्लोक 34 के अंत तक जाएँ, क्योंकि मैं उनकी दुष्टता को क्षमा करूँगा, और उनके पापों को फिर कभी याद नहीं रखूँगा। इसलिए, पापों की क्षमा, अर्थात्, परमेश्वर, इस्राएल के पापों को क्षमा करता है, जिसके कारण उन्हें पहले निर्वासन में जाना पड़ा, जिसके कारण उन पर परमेश्वर का न्याय आया, अब नई वाचा के माध्यम से क्षमा किया जाएगा।

इसलिए, पुराने नियम में नई वाचा के वादों में से एक पापों की क्षमा है। लेकिन साथ ही, हम नए नियम में जो पाते हैं, जो पुराने नियम के तहत पुराने नियम की बलिदान प्रणाली से जुड़ा था, वह अब क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से पूरा हुआ है क्योंकि यह यीशु की मृत्यु के माध्यम से है कि यिर्मयाह और यहजेकेल और अन्य जगहों पर वादा किया गया यह नया नियम अंततः आरंभ हुआ है। हमने इसे पहले ही इब्रानियों 9 और 10 में सबसे स्पष्ट रूप से देखा है, और मैं वापस जाकर उसके खंड नहीं पढ़ने जा रहा हूँ।

लेकिन इब्रानियों 9 और 10 में, हम पाते हैं कि यीशु अपनी मृत्यु के माध्यम से स्पष्ट रूप से उद्घाटन कर रहे हैं, यीशु यिर्मयाह की नई वाचा का उद्घाटन कर रहे हैं। इब्रानियों के लेखक ने यिर्मयाह 31 से विस्तार से उद्धरण दिया है। इसलिए अब पापों की क्षमा पुराने नियम की बलिदान प्रणाली से जुड़ी नहीं है, लेकिन अब पुराने नियम की बलिदान प्रणाली, जो अंततः और अंततः और पूरी तरह से पाप से निपट नहीं सकती थी, किसी बड़ी चीज़ की ओर इशारा करती है, और वह अंतिम बलिदान है जो अब यीशु मसीह देता है, यानी खुद, लोगों के पापों से निपटने और नई वाचा के तहत पापों की वादा की गई क्षमा लाने के लिए।

और इसलिए, मेरी राय में, मेरी राय में, बाकी पॉलिन साहित्य में, विशेष रूप से जब आप पापों की क्षमा के संदर्भ पाते हैं, तो मुझे लगता है कि लेखक यह मान रहा है कि यीशु की मृत्यु ने अब यिर्मयाह और यहजेकेल की नई वाचा का उद्घाटन किया है जहाँ परमेश्वर ने वादा किया था कि वह अपने लोगों के पापों से निपटेगा और अब हम पाते हैं कि यह यीशु की मृत्यु में पूरी हो रही है, नई वाचा के तहत पापों की क्षमा को पूरा कर रही है। इसलिए, उदाहरण के लिए, इफिसियों 1 और पद 6 में, वास्तव में इफिसियों 1 और पद 7 में, फिर से उस आशीर्वाद की सूची में जो परमेश्वर अब, उद्धार का आशीर्वाद जो परमेश्वर अपने लोगों के लिए लाता है, पद 7, उसमें, यीशु मसीह में, हमें उसके लहू के माध्यम से छुटकारा, पापों की क्षमा मिलती है। और ध्यान दें कि पापों की क्षमा अब छुटकारे के साथ कैसे जुड़ी हुई है।

हम इस विषय पर भी थोड़ी देर में बात करेंगे। लेकिन छुटकारा, पापों की क्षमा जिसे हम यहाँ इफिसियों 1 पद 7 में देखते हैं, यीशु मसीह से जुड़ा हुआ है, यीशु मसीह के माध्यम से आता है, अर्थात् उसकी मृत्यु के माध्यम से, और इसे नई वाचा के उद्धार की पूर्ति के रूप में देखा जाना चाहिए। कुलुस्सियों अध्याय 1 और पद 14, जिसमें, अर्थात् मसीह में, हमें छुटकारा, पापों की क्षमा मिलती है।

फिर से छुटकारे के साथ संबंध पर ध्यान दें, लेकिन पापों की क्षमा कुछ ऐसी चीज है जो यीशु मसीह के माध्यम से आती है। और फिर से, मैं कुलुस्सियों में भी तर्क दूंगा, अंततः संबंध नई वाचा, नई वाचा के उद्धार की आशीषों से है जो यीशु मसीह लाता है। बाद में, कुलुस्सियों के अध्याय 2 में पद 13 में, जब आप अपने पापों और अपने शरीर की खतनारहित अवस्था में मरे हुए थे, तो परमेश्वर ने आपको मसीह के साथ जीवित कर दिया।

उसने आपके सभी पापों को क्षमा कर दिया। और फिर अंत में रोमियों अध्याय 3 में, रोमियों अध्याय 3 में, उस खंड में जिसे कुछ लोग अक्सर रोमियों के हृदय के रूप में मानते हैं, कम से कम विषयगत रूप से, आप शायद इसके लिए एक अच्छा तर्क दे सकते हैं। रोमियों अध्याय 3 और श्लोक 25 में, परमेश्वर ने उसे प्रायश्चित के बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया।

आइए देखें, मुझे वापस आने दें। क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, और सब उसके अनुग्रह से मसीह यीशु के द्वारा आए छुटकारे के द्वारा संतमंत धर्मी ठहराए जाते हैं। फिर परमेश्वर ने उसे विश्वास के द्वारा ग्रहण किए जाने के लिए उसके लहू के बहाने प्रायश्चित के बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया।

उसने ऐसा अपनी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए किया क्योंकि अपनी सहनशीलता में उसने पहले किए गए पापों को दण्डित किए बिना छोड़ दिया था। इसलिए, क्षमा की स्पष्ट भाषा वहाँ नहीं है। लेकिन इस पाठ का महत्व यह है कि रोमियों 3.25 में यीशु मसीह की मृत्यु के संदर्भ में, स्पष्ट रूप से पापों के भुगतान के रूप में यीशु मसीह की मृत्यु है।

यह परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को क्षमा करने के अनुग्रहपूर्ण कार्य का आधार है। फिर से, क्षमा शब्द का उपयोग किए बिना, एक पाठ जो शायद सबसे अच्छी तरह से बताता है कि परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है, वह है 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 और पद 19, जहाँ लेखक कहता है कि परमेश्वर लोगों को उनके साथ मिलाने का काम कर रहा था, न कि लोगों के पापों को उनके विरुद्ध गिन रहा था। इसलिए, पापों की क्षमा का अर्थ है कि परमेश्वर उनके पापों को उनके विरुद्ध नहीं गिनता, बल्कि इसके बजाय, उसने यिर्मयाह और यहजेकेल के आने वाले नए वाचा के वादे को पूरा करते हुए उन्हें क्षमा कर दिया है।

तो एक बार फिर, उत्पत्ति अध्याय 3 में पाप के प्रभावों को अब मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा उलट दिया गया है जो पाप की समस्या से निपटता है। यह केवल आदम का पाप नहीं है बल्कि इस्राएल का भी पाप है, इसलिए पापों की क्षमा और नई वाचा की पूर्ति अब यीशु मसीह में पूरी हो गई है और उसके लोगों तक फैली हुई है। इसके संबंध में एक और बहुत महत्वपूर्ण विषय

है, और हम पहले ही देख चुके हैं कि पापों की क्षमा इस विषय से जुड़ी हुई है, और वह है छुटकारे का विषय।

मोचन उन छवियों में से एक है जिसकी पृष्ठभूमि पुराने नियम की है और पॉल के समय की ग्रीको-रोमन दुनिया की पृष्ठभूमि भी है, और वह यह है कि यह बाज़ार से आती है। यह एक व्यावसायिक छवि है कि मोचन उस स्वतंत्रता को संदर्भित करता है जो कीमत चुकाने के साथ आती है। और इसलिए, हालांकि कुछ लोग इस बाद वाले हिस्से पर विवाद करेंगे, जो कि कीमत चुकाने के द्वारा होता है, जैसा कि हमेशा या यहां तक कि प्रमुख रूप से नए नियम में मौजूद रहा है, मुझे ऐसा लगता है कि जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, पूरे नए नियम में मोचन भाषा का रक्त के साथ संबंध, यानी यीशु मसीह के रक्त के साथ, यह सुझाव देता है कि मसीह, या क्रूस पर उनकी मृत्यु, वह कीमत है जो उनके लोगों को मुक्त करने के लिए चुकाई जाती है, यानी वे लोग जो यीशु मसीह और सुसमाचार के प्रति विश्वास में प्रतिक्रिया करते हैं।

इसलिए, उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों अध्याय 6 पद 20, 1 कुरिन्थियों 6 और पद 20 में, मुझे लगता है कि यह वह पाठ है जिसे मैं चाहता हूँ कि हम इसे पढ़ें: क्या तुम नहीं जानते, पद 18 में अनैतिकता से दूर रहने, यौन अनैतिकता से दूर रहने के उनके आदेश के आधार के रूप में, पद 19, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर हैं जो तुम में है, जिसे तुमने परमेश्वर से प्राप्त किया है? तुम अपने नहीं हो; तुम्हें खरीदा गया है, या तुम्हें एक कीमत पर खरीदा गया है। और इसलिए यहाँ स्पष्ट रूप से, पॉल एक कीमत पर खरीदे जाने के बारे में बात करता है, हालाँकि वह हमें यह नहीं बताता कि 1 कुरिन्थियों 6 पद 20 में कीमत क्या है। लेकिन मुझे लगता है कि पॉल के बाकी पत्रों और मसीह की मृत्यु पर जोर, मसीह के खून, उसकी मृत्यु के संदर्भ में मोचन के संबंध के संदर्भ में यह मुश्किल है।

यह सोचना मुश्किल है कि जो कीमत चुकाई गई है वह क्रूस पर यीशु की मृत्यु है, और उसका खून वह कीमत है जो हमें छुड़ाती है या हमें मुक्त करती है। जैसा कि मैंने कहा, संभवतः शुरुआती बिंदु, भले ही यह एक ऐसा पाठ है जो ग्रीको-रोमन दुनिया और वाणिज्यिक और बाज़ार की भाषा के संदर्भ में, पॉल के गैर-यहूदी पाठकों के कानों में गूंजता होगा, इसके लिए सबसे प्रमुख पृष्ठभूमि शायद पुराना नियम और विशेष रूप से निर्गमन है। आप वापस जा सकते हैं और निर्गमन के विषय पर हमारी पिछली चर्चा को याद कर सकते हैं।

निर्गमन, जहाँ इस्राएल को मिस्र से मुक्ति मिली थी, जहाँ वे मिस्र की गुलामी से मुक्त और मुक्त हुए, को अक्सर उनके उद्धार के रूप में संदर्भित किया जाता है। निर्गमन अध्याय 15 और पद 11 पुराने नियम के दो ग्रंथों को संदर्भित करता है जो स्पष्ट रूप से इस्राएल की मिस्र से मुक्ति या मुक्ति के संदर्भ में उद्धार की भाषा का उपयोग करते हैं। लाल सागर को पार करने के बाद मूसा के गीत में अध्याय 15, अध्याय 15 और पद 11।

आइए निर्गमन 15 और श्लोक 11 देखें। आइए देखें, हे प्रभु, देवताओं में कौन आपके जैसा है? आपके जैसा कौन है, पवित्रता में राजसी, महिमा में विस्मयकारी, और शक्तियों का काम करने वाला? आइए देखें कि यह वह श्लोक नहीं है जो मैं चाहता हूँ। मुझे वापस आने दो।

मैं आगे पढ़ूँगा। श्लोक 12, तू अपना दाहिना हाथ बढ़ाता है, और पृथ्वी तेरे शत्रुओं को निगल जाती है। अपने अटल प्रेम में, तू अपने लोगों का नेतृत्व करेगा जिन्हें तूने छोड़ा है।

श्लोक 12 वही है जो मैं चाहता था। खास तौर पर श्लोक 12 और 13। तू अपना दाहिना हाथ बढ़ाता है, और धरती तेरे शत्रुओं, मिस्र की सेना को निगल जाती है।

अपने अविचल प्रेम में, आप उन लोगों का नेतृत्व करेंगे जिन्हें आपने छोड़ा है। यानी, आपने उन्हें आज़ाद कर दिया है। मुक्ति का मतलब है आज़ादी और बंधन से मुक्ति।

परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से आज़ाद करके ऐसा किया। निर्गमन 15, आयत 11. भजन 77 में भी हमें इसका ज़िक्र मिलता है।

हम देखते हैं, खास तौर पर भजन संहिता में, लेकिन पुराने नियम में अन्यत्र भी, अक्सर परमेश्वर या लेखक अपने लोगों की ओर से परमेश्वर के महान कार्यों को याद करते हैं। वे अक्सर निर्गमन को याद करते हैं जहाँ परमेश्वर अपने लोगों को मिस्रियों की गुलामी से छोड़ा है: भजन अध्याय 77 और श्लोक 15।

अपने शक्तिशाली भुजबल से, आपने अपने लोगों, याकूब और यूसुफ के वंशजों को छोड़ा है। नए नियम में छुटकारे की भाषा संभवतः परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिस्र से छोड़ने से जुड़ी है। वह मुक्त करता है, वह बंधन से बचाता है, और अब वह अपने लोगों को मुक्त करता है।

अब हम नए नियम में पाते हैं कि यह मसीह में हमारे उद्धार के माध्यम से पूरा होता है। अब हम पाप की गुलामी से मुक्त हो गए हैं। सुसमाचार का उदाहरण देने के लिए मरकुस अध्याय 10, श्लोक 45 देखें।

यीशु कहते हैं, मैं सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण देने आया हूँ। खरीदने या वापस खरीदने की भाषा। गलातियों का अध्याय 1 और पद 4। गलातियों में कई स्थानों पर परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के छुटकारे का उल्लेख है।

छुटकारे की भाषा का उपयोग करना। गलातियों अध्याय 4। वास्तव में, गलातियों अध्याय 1 और पद 4 से शुरू करते हुए। पद 3 पर वापस जाएँ। हमारे पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से आपको अनुग्रह और शांति मिले, जिन्होंने हमारे पापों के लिए खुद को दे दिया ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें वर्तमान बुरे युग से छोड़ा जा सके। अब, हमें वर्तमान बुरे युग की गुलामी से छोड़ने का यह विचार उद्धार, बचाव और मुक्ति की भाषा भी है, लेकिन छुटकारे की भाषा भी है।

लेकिन बाद में अध्याय 3, श्लोक 13 में, मसीह ने हमें छोड़ा, हमें मुक्त किया, या खुद एक अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से मुक्त किया। बाद में, निर्गमन भाषा के संदर्भ में, गलातियों के अध्याय 4 और 4 और 5। लेकिन जब समय पूरा हो गया, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को, जो एक स्त्री से जन्मा, व्यवस्था के अधीन जन्मा, व्यवस्था के अधीन लोगों को छोड़ने के लिए

भेजा, ताकि हम पुत्रों के रूप में गोद लिए जा सकें। एक नए निर्गमन के संदर्भ में, यीशु मसीह अब अपने लोगों को बंधन से, अब व्यवस्था के अधीन बंधन से छुड़ाने के लिए आया है।

हमें इफिसियों के अध्याय 1 और पद 7 में कहीं और छुटकारे की भाषा मिलती है। मैं उसे पढ़ने में समय नहीं लगाऊँगा। कुलुस्सियों के अध्याय 1 और पद 14, दोनों ही पद, छुटकारे की भाषा, पापों की क्षमा के संदर्भ में है। फिर, रोमियों के अध्याय 3 पद 24 में भी छुटकारे के बारे में बात की गई है जो परमेश्वर द्वारा हमारे पापों से निपटने से जुड़ा है।

लेकिन छुटकारे के साथ एक ऐसा आयाम भी जुड़ा है जो अभी तक नहीं हुआ है। हम पहले से ही छुटकारे पा चुके हैं। यानी, हम यीशु की अपनी मृत्यु की कीमत चुकाकर पाप और मृत्यु के बंधन से पहले से ही मुक्त हो चुके हैं।

लेकिन एक ऐसा आयाम भी है जो अभी तक नहीं आया है। उदाहरण के लिए, हम इसे इफिसियों की पुस्तक में पाते हैं। इफिसियों के अध्याय 1 और श्लोक 14 में।

हमें पद 13 में पवित्र आत्मा की मुहर मिली है। इफिसियों 1:14, जमानत कौन है? पवित्र आत्मा जमानत है, जो परमेश्वर के लोगों के छुटकारे तक हमारी विरासत की गारंटी देता है। इसलिए, हमारा छुटकारे, इस वर्तमान युग से, पाप और मृत्यु से हमारी मुक्ति और मुक्ति, अभी पूरी तरह से और पूर्ण रूप से पूरी होनी बाकी है।

इसके अलावा, इफिसियों अध्याय 4 और श्लोक 30 उसी पुस्तक में हैं। परमेश्वर की पवित्र आत्मा को दुखी न करें जिसके साथ आपको छुटकारे के दिन के लिए मुहर लगाई गई थी। एक और युगांतशास्त्रीय संदर्भ।

और आप रोमियों 8 और श्लोक 23 को भी इसमें जोड़ सकते हैं। रोमियों अध्याय 8 और श्लोक 33 के संदर्भ में, जाहिर है, सृष्टि स्वयं भी छुटकारे की प्रतीक्षा कर रही है। रोमियों 8.23 कहता है, केवल इतना ही नहीं, बल्कि हम स्वयं, 22 तक, पूरी सृष्टि वर्तमान समय तक प्रसव पीड़ा में कराहती है।

इतना ही नहीं, बल्कि हम स्वयं, जिनके पास आत्मा का पहला फल है, अपने शरीर के उद्धार के लिए पुत्रत्व में अपने दत्तक ग्रहण की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हुए भीतर से कराहते हैं। तो, फिर से, उद्धार का एक अभी तक नहीं या एक युगांतकारी पहलू भी है। तो, उद्धार, उद्धार का विषय, क्रूस पर मसीह की मृत्यु के माध्यम से इस वर्तमान बुरे युग से पाप से मुक्ति या स्वतंत्रता का सुझाव देता है।

क्रूस पर मसीह की मृत्यु को उस कीमत के रूप में देखा जा सकता है जो चुकाई गई है, यीशु का खून, यीशु की मृत्यु, वह कीमत जो चुकाई गई है जो हमें मुक्त करती है और हमें पाप के बंधन से मुक्त करती है। और यह अभी वर्तमान में महसूस किया जाता है। लेकिन यह भी हमारे भविष्य के छुटकारे की गारंटी है, जिसमें हमारे भौतिक शरीर भी शामिल हैं।

अब, अगले विषय पर चलते हैं, अगले विषय का परिचय देते हैं, यानी औचित्य या धार्मिकता। औचित्य की भाषा, खास तौर पर पौलुस की पत्रियों में, और हम लगभग पूरी तरह से पौलुस पर ध्यान केंद्रित करेंगे क्योंकि वह वही है जिसके लिए औचित्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और कम से कम हमें औचित्य की भाषा पौलुस की पत्रियों के बाहर बिल्कुल भी नहीं मिलती, भले ही यह अवधारणा वहाँ हो।

लेकिन औचित्य एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ है धर्मी घोषित करना, दोषमुक्त करना, पाप का दोषी न घोषित करना। यह एक ऐसा शब्द है जो कानून की अदालतों से निकला है। यह एक कानूनी शब्द या फोरेंसिक शब्द है।

और फिर, इसका प्राथमिक विकास पॉलिन ग्रंथों में है। उदाहरण के लिए, हम इसे रोमियों के अध्याय 3 और श्लोक 31 में पाते हैं। वैसे, रोमियों और गलातियों की दो पुस्तकें हैं जहाँ धर्मी ठहराए जाने या विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की भूमिका महत्वपूर्ण है।

और अध्याय 3 और आयत 21 में, लेकिन अब व्यवस्था से अलग, परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट की गई है जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं ने दी है। यह धार्मिकता विश्वास के द्वारा दी जाती है। इसलिए, धार्मिकता की यह भाषा संभवतः उसी शब्दावली में औचित्य को संदर्भित करती है।

पौलुस ने अन्यत्र भी इसी शब्दावली का प्रयोग किया है, जिसका अनुवाद हमारे अंग्रेजी अनुवाद में प्रायः औचित्य के रूप में किया गया है। इसलिए, रोमियों 3 की आयत 24 में, हमारे सभी पाप परमेश्वर की महिमा से रहित हैं और उनके अनुग्रह से मुक्त रूप से उचित ठहराए जाते हैं। बाद में, रोमियों 3 की आयत 26 में, वह वर्तमान समय में अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन करता है ताकि वह न्यायी हो और यीशु मसीह में विश्वास करने वालों को न्यायी ठहराए।

और फिर गलातियों में पौलुस के तर्क में, जहां औचित्य की भाषा भी अध्याय 2 और पद 16 में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मैं 15 पढ़ूंगा। हम जो जन्म से यहूदी हैं और अन्यजाति पापी नहीं हैं, हम जानते हैं कि एक व्यक्ति व्यवस्था के कामों से नहीं बल्कि यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा औचित्यपूर्ण ठहराया जाता है।

इसलिए हमने भी मसीह यीशु में अपना विश्वास रखा है ताकि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें। इसलिए विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की भाषा, फिर से, यह वह भाषा है, जैसा कि मुझे आशा है कि यह प्रदर्शित करेगी, मुख्य रूप से कानूनी या फोरेंसिक भाषा के उपयोग के रूप में समझा जाना चाहिए, जो यह वर्णन करने के लिए है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को धर्मी घोषित करके उनके साथ क्या किया है। यानी, उन्हें निर्दोष घोषित करके और उन्हें उनके पापों के लिए निर्दोष घोषित करके।

अब, आज नए नियम के धर्मशास्त्र में पॉल की औचित्य भाषा के अर्थ पर बहुत महत्वपूर्ण बहस चल रही है। अक्सर, इसे पॉल पर पुराने दृष्टिकोण और पॉल पर नए दृष्टिकोण के बीच का अंतर कहा जाता है। पॉल पर पुराने दृष्टिकोण ने मूल रूप से औचित्य को मुख्य रूप से कानूनी शब्दों में समझा।

यह परमेश्वर द्वारा हमें धर्मी घोषित करना है। परमेश्वर एक फोरेंसिक शब्द है जो परमेश्वर के सामने हमारी स्थिति और स्थिति से संबंधित है। यह तथ्य कि हमें हमारे पापों को क्षमा कर दिया गया है।

हमें बरी कर दिया गया है। हमें निर्दोष घोषित किया गया है। जबकि नए दृष्टिकोण से, एनटी राइट और जेम्स डन, आप में से कुछ लोग उन नामों को पहचान सकते हैं और औचित्य को इस रूप में देख सकते हैं कि परमेश्वर के सच्चे लोग कौन हैं।

वाचा के संदर्भ में, परमेश्वर की वाचा के लोग कौन हैं? इसलिए, औचित्य का संबंध परमेश्वर के सच्चे लोगों की घोषणा करने से अधिक है। एनटी राइट का मानना है कि यह दोनों है। फोरेंसिक, दोषी न होने की घोषणा, परमेश्वर के सामने खड़े होने की स्थिति, पाप से निर्दोष होना, धर्मी घोषित होना, दोषमुक्त होना, लेकिन साथ ही परमेश्वर के सच्चे लोगों का सदस्य घोषित होना।

तो, हमारे अगले भाग में, हमारे अगले व्याख्यान में, मैं इस बारे में और बात करना चाहता हूँ कि हमें पौलुस की औचित्य की भाषा को कैसे समझना चाहिए और यह भी प्रदर्शित करना चाहिए कि यह कैसे स्पष्ट रूप से फिट बैठता है और इसे पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं समझे गए ढांचे के भीतर कैसे समझा जाना चाहिए।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन और न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 26, मोक्ष, भाग 1 है।